4

परिपक्वता की ओर

(5:11-6:20)

वे लोग जिन्हें इब्रानियों की पत्री लिखी गई गिरने के खतरे में थे। इस पत्र को पहली बार पढ़ने के समय उनकी स्थिति क्या थी? हमें वचन में बताया गया है:

> इसके विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, जिसका समझाना भी कठिन है; इसलिए कि तुम ऊंचा सुनने लगे हो। समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? और ऐसे ही हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए। क्योंकि दूध पीने वाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है। पर अन्न सयानों के लिए है, जिनके ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिए पक्के हो गए हैं (इब्रानियों 5:11-14)।

वे अपरिपक्व अर्थात आत्मिक रूप में बच्चे और ठोस आहार लेने में असमर्थ थे। चाहे वे इतने समय से मसीही थे कि अब उन्हें सिखाने वाले होना चाहिए था, पर अभी भी उन्हें सुसमाचार के ''आरम्भिक नियम'' बताए जाने आवश्यक थे!

आज कलीसिया के अधिकतर लोगों का वर्णन इसी प्रकार से किया जा सकता है। वे कई कई सालों से मसीही हैं पर आज भी वे आत्मिक रूप में अपरिपक्व हैं। वे ''ठोर आहार'' लेने अर्थात परमेश्वर के वचन के ''अन'' को समझने के अयोग्य हैं। उन्हें अभी भी सुसमाचार की मूल बातों की समझ नहीं है और उन्हें बच्चों वाला खाना दिया जाना आवश्यक है!

हमारे कई लोग उसी प्रकार से अपरिपक्व हैं जैसे वे मसीही थी जिनके नाम इब्रानियों की पत्री लिखी गई, इस कारण आइए ध्यान दें कि उन्हें क्या करने को कहा गया था। उनके लिए पवित्र आत्मा का संदेश हमें भी अपनी आत्मिक अपरिपक्वता की समस्या को सुलझाने में सहायता देगा।

आत्मिक रूप में अपरिपक्व मसीही लोगों को क्या करना चाहिए?

पहली सदी के उन ''ऊंचा सुनने वाले'' आत्मिक रूप से नवजात शिशुओं को क्या करना आवश्यक था? इब्रानियों 6:1, 2 पढ़ें:

> इसलिए आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर, हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने। और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अन्तिम न्याय की

उन्हें ''सिद्धता की ओर बढ़ना'' आवश्यक है। (KJV में अनुवाद हुए शब्द ''सिद्धता'' का अर्थ ''परिपूर्णता'' है।)

हमें उसी लक्ष्य की ओर बढ़ने की कोशिश करनी आवश्यक है। आत्मिक परिपक्वता या सिद्धता हर मसीही का लक्ष्य होना चाहिए। जब हम मसीही बनते हैं, तो हमारा नया जन्म होता है। मसीही जीवन का आरम्भ हम मसीह में बालकों के रूप में करते हैं; परन्तु कलीसिया में अपने जीवन में बने रहते हुए हमें बढ़ना अर्थात परिपक्व होना यानी आत्मिक रूप में व्यस्क होना चाहिए (देखें 2 पतरस 3:18)!

हम इस लक्ष्य को कैसे पा सकते हैं? आम तौर पर हम परमेश्वर के वचन में भाग लेकर बढ़ते हैं (देखें 1 पतरस 2:2)। परमेश्वर का वचन हमारे लिए बहुमूल्य होना चाहिए यानी हमें सबसे अच्छे खाने की तरह इसकी भूख होनी चाहिए (भजन संहिता 19:10ख; देखें मत्ती 5:6)। कोई मसीह बिना परमेश्वर के वचन को खाए आत्मिक रूप में परिपक्व नहीं हो सकता। परन्तु आत्मिक परिपक्वता में बढ़ने के लिए आवश्यक है कि हम अपने बाइबल अध्ययन को सुसमाचार की (ABC) अर्थात (''आरम्भिक शिक्षा'')[1] तक सीमित न रहें। हमें छिछले पानी में से निकलकर गहरे पानी में जाने की इच्छा और योग्यता होनी आवश्यक है। जैसा कि परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखक ने कहा कि हम में वचन के ''अन्न'' को समझने के लिए अध्ययन करना और कोशिश करना आवश्यक है। यदि हम नये नियम की ''आरम्भिक शिक्षा'' के अलावा और कुछ नहीं जानते और हमें और सीखने में कोई दिलचस्पी नहीं है तो हम अपने आपको आत्मिक रूप में परिपक्व नहीं कह सकते। कलीसियाओं और लोगों को यह संदेश सुनना आवश्यक है। कई मण्डलियों में सदस्य या तो सुनना नहीं चाहते या हो सकता है कि उन्हें ''परमेश्वर के वचनों की आधी शिक्षा'' के अलावा और कुछ सुनने का अवसर ही नहीं मिला (5:12)।

जब लेखक ने कहा कि हमें ''आदि शिक्षा'' को छोड़ देना चाहिए तो उसके यह कहने का अर्थ बिल्कुल नहीं था कि जैसे प्रचारकों को मसीहियत की बुनियादी सच्चाइयों का प्रचार नहीं करना चाहिए।[2] इसके बजाय वह कह रहा था कि उन बुनियादी सच्चाइयों पर ही ज़ोर न दिया जाए या मसीही लोगों को केवल वही न बताई जाएं। इसके बजाय मसीही लोगों कोक स्वयं बाइबल की उन सच्चाइयों को जिन्हें ''आदि शिक्षा'' नहीं कहा जाएगा, और सीखने के अवसर ढूंढ़ने चाहिए। हो सकता है कि कुछ कलीसियाओं ने इस वचन को गलत समझकर ''आधी शिक्षा'' को निकालने की गलती की। ऐसा होने पर, सदस्यों को अपने ही विश्वास की ABC की भी समझ नहीं है!

तो हम देखते हैं कि लेखक ने हर मसीही को आत्मिक रूप में परिपक्व होने की कोशिश करने का आग्रह किया। ऐसा करने के लिए क्या करना आवश्यक होगा?

अपरिपक्व मसीही लोगों ''सिद्धता की ओर बढ़ना'' क्यों चाहिए?

लेखक ने ''गाजर या छड़ी'' के ढंग का इस्तेमाल करते हुए अपने पाठकों को परिपक्व होते रहने की कोशिश करते रहना चाहिए।[3] अध्याय 6 में उसने सिद्ध होने के दो कारण सुझाए।

पहले तो हमें गिरने के परिणामों के कारण सिद्ध होना आवश्यक है। (पढ़ें इब्रानियों 6:4-

8.) यह वचन बताता है कि गिर जाना सम्भव है! यह वचन बिना शर्त उन कुछ लोगों की बात करता है जो ''अटक गए हैं'' (6:6)। यह इब्रानियों की पुस्तक के अन्य वचनों की तरह विश्वास से गिरने की सम्भावना की पुष्टि करता है।

इसके अलावा सच्चे मसीही गिर सकते हैं। इन आयतों में बताए गए ''भटक जाने वाले'' लोगों वे हैं ''जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय बरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं'' (6:4)। ऐसी बातें उन लोगों के लिए नहीं कही जा सकती जो सचमुच में मसीही नहीं हैं![4]

विश्वासत्याग[5] एक मसीही व्यक्ति को खतरनाक स्थिति में डाल देता है। ये आयतें बताती हैं कि भटक जाने वाले को बहुत खतरनाक स्थिति मिलती है ''उन्हें मन फिराव के लिए फिर नया बनाना अनहोना है'' (6:6)। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह नहीं है कि एक मसीही व्यक्ति एक ही पाप अर्थात ''क्षमा न होने वाला पाप'' कर सकता है जिसके लिए उसे क्षमा न मिल सकती हो। इसके बजाय यह एक बात अर्थात बात में बने रहने की बात करता है (''वे परमेश्वर के पुत्र को ... क्रूस पर चढ़ाते [रहते] हैं'')। जब तक लोग पाप में लगे रहेंगे, जब तक उन्हें मन फिराव के लिए लाया नहीं जा सकता। इसके अलावा यह आयत कहती है कि ''उन्हें मन फिराव के लिए नया बनाना अनहोना है'' यानी दूसरे लोग उन्हें मन फिराव के लिए ला नहीं सकते। यदि वे मन फिराना चुनते हैं तो उनका उद्धार हो सकता है, चाहे वे कितनी भी दूर क्यों न भटक गए हों। परन्तु महत्वपूर्ण बात अर्थात इस संदर्भ की मुख्य बात यह है कि हम अपने साथ ऐसा न होने देने को चौकस रहें! हमें विश्वासत्याग करने और अपने आपको ऐसी स्थिति में पाने के प्रति चौकस रहना आवश्यक है जिससे हमें मन फिराव के लिए लाया नहीं जा सकता!

आत्मिक अपरिपक्वता विश्वासत्याग का कारण बनती है। इसके अलावा यह वचन यह सुझाव देता लगता है कि यदि हम बड़े नहीं हुए या हम बड़ नहीं रहे हैं, तो हम विश्वास त्याग के किनारे पर खड़े हैं।

विश्वासत्याग का परिणाम विनाशकारी है। 6:7, 8 में लेखक ने यह बताने के लिए कि यदि मसीही लोग विश्वासत्याग में बने रहते हैं तो इसका क्या परिणाम हो सकता है एक उदाहरण का इस्तेमाल करें। वर्षा से तृप्त हुई भूमि की तरह, मसीही लोगों को आशीष मिली है और उन्हें अच्छा फल लाना चाहिए। यदि वे इसके विपरीत कांटे उगाते हैं यानी वे भटक जाते हैं तो उन्हें अपने आगे केवल उस भूमि के जलाए जाने जैसी बात ही देखनी चाहिए। वे जलाए जाने अर्थात नष्ट किए जाने की उम्मीद कर सकते हैं (तुलना करें 10:26-31)!

दूसरा, हमें अपनी आशा के कारण ''सिद्धता की ओर बढ़नते रहना'' आवश्यक है। (पढ़ें इब्रानियों 6:9-20.) यहां उसने तीन तथ्यों की प्रोत्साहित करने वाली बात के द्वारा जिससे उसके पाठकों को आत्मिक रूप में बढ़ने की प्रेरणा मिलनी चहिए ''गाजर'' के ढंग का इस्तेमाल किया।

(1) उसने उन में भरोसा जताया (6:9)। ऐसे शब्दों से उन्हें प्रोत्साहन मिला होगा।

(2) उसने उनकी पिछली सेवा की बात की (6:10-12), यह कहते हुए कि परमेश्वर उन अच्छी बातों को नहीं भूलेगा जो उन्होंने की थी और उन्हें यत्नशील बने रहने में प्रोत्साहित किया। एक अर्थ में उसने कहा, ''यह सुनिश्चित करने में कि 'पवित्र लोगों की सेवा करने' में जितनी भी ऊर्जा तुम अपनी आशा के पूरा होने के लिए लगा सकते हो लगाओ।''

(3) उसने उस आश्वासन की बात की जिसे वे पा सकते थे क्योंकि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं पक्की और अडोल हैं (6:13-20)। परमेश्वर अपने लोगों को निराश नहीं करता! अब्राहम की कहानी इस सच्चाई को साबित करती है क्योंकि उसने धीरज से प्रतीक्षा की और अन्त में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को पूरा होते पाया (6:13-15)। इसके अलावा हम और भी सुनिश्चित हो सकते हैं कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं पक्की हैं क्योंकि उनमें दो ''अपरिवर्तिनीय'' बातें हैं। एक तो परमेश्वर जो अपने स्वभाव के कारण अपरिवर्तिनीय है और दूसरा शपथ के साथ की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा जो उसकी तरह ही अपरिवर्तिनीय है। परमेश्वर की विश्वासयोग्यता उस प्रतिज्ञा को पक्का करती है और हमें ''उस आशा को साम्हने रखी हुई है पाप्त'' करने की दिलेरी दी (6:18)। वह आशा हमारे प्राण का लंगर है (6:19); यह हमें बाहरी परिस्थितियों के बावजूद सुरक्षित और स्थिर जीवन जीने के योग्य बनाती है। हमारी आशा इस जीवन के पार की है; यह ''पर्दे के भीतर प्रवेश करती है,'' या स्वर्ग की ओर आगे को देखती है (6:20)। इसलिए हमारे साथ इस संसार में जो भी हो वह कुल मिलाकर हमारे जीवनों को गिरा नहीं सकती।

सारांश

आइए हम सिद्धता की ओर बढ़ते रहें! कितनी बड़ी चुनौती है! हमारी एक पसन्द है: मण्डली के रूप में हम क्या बनें? बच्चों की भीड़? व्यक्तिगत रूप में मैं क्या बनूं? एक आत्मिक नवजात शिशु? ऐसा न हो! परमेश्वर से भटकने का खतरा और उस आशा का पुन: आश्वासन जो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का कारण है हमें लगातार आत्मिक रूप में बढ़ते रहने की तलाश करवाता है!

टिप्पणियां

[1]लेखक ने मन फिराव और विश्वास की शिक्षाओं की ''ABC's'' के उदाहरण के रूप में की ''बपतिस्मों और हाथ रखने'' पर और ''मरे हुओं के जी उठने और अन्तिम न्याय'' के निर्देषों का इस्तेमाल किया। [2]कलीसिया की अधिकतर सभाओं में आने वाले कुछ लोग कई बार मसीही नहीं होते और उन्हें मसीहियत के मूल नियमों पर सबक सुनने आवश्यक होते हैं। [3]हमें ''गाजर या छड़ी'' का रूपक ''जैसे गधे को चलाने के उदाहरण के लिए हो सकता है।'' वह गधे के सामने गाजर निकालता है (प्रतिज्ञा करता है) जिससे वह गधा आगे बढ़ता है, या वह गधे को आगे बढ़ाने के लिए छड़ी से (डांटकर) मार सकता है। [4]यह बात की जानी चाहिए क्योंकि कुछ लोग विश्वसत्याग की असम्भावना में विश्वास रखते हैं। वे कुछ लोगों के विश्वासत्याग की स्पष्ट बात (बाइबल तथा उनके अपने अनुभव में) यह कहकर समझाते हैं कि जो लोग भटक गए वे केवल बाहर से मसीह लगते थे पर वास्तव में वे परमेश्वर की सन्तान नहीं थे। [5]विश्वासत्याग या भटक जाना या गिर जाना इस वचन में केवल एक पाप करने वाले मसीही के लिए नहीं है। बल्कि यह जानबूझकर पाप करने वाले अर्थात करते रहने वाले मसीही के लिए है (10:26) जो अपने पापों से मन फिराने से इनकार करता है।